नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

गांधी दुनिया के लिए प्रासंगिक– कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

गांधी और उनकी समसामयिक प्रासंगिकता: समाज, संस्कृति और स्वराज विषय पर त्रि दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद उदघाटित

- **हिंदी विश्वविद्यालय और भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद का आयोजन**
- **बुधवार को सेवाग्राम बापू कुटी में होगा अकादमिक सत्र**

वर्धा, दि. 20 अगस्त 2019 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा है कि महात्मा गांधी की विचार दृष्टि भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया के लिए प्रासंगिक है।गांधीजी की सभ्यता दृष्टि का मूल्यांकन नहीं हुआ है। वे स्वराज्य और रामराज्य को समान मानते थे। वे मानते हैं कि महिलाओं की सहभागिता के बिना रामराज्य की कल्पना नहीं की जा सकती। कुलपति ने कहा कि मनुष्य विरोधी सभ्यता खिलाफ

कोई खड़ा दिखाई देता है तो वह गांधी है। वे भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद नई दिल्ली एवं महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 20, 21

और 22 अगस्त को 'गांधी और उनकी समसामयिक प्रासंगिकता : समाज, संस्कृति और स्वराज' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद के उदघाटन समारोह में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए बोल रहे थे।

परिसंवाद का उदघाटन मंगलवार, 20 को विश्वविद्यालय के डॉ.श्यामाप्रसाद मुखर्जी भवन के कस्तूरबा सभागार में किया गया। इस अवसर पर गांधी चिंतक प्रो. रामजी सिंहभारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रो. अरविंद जामखेडकर,इतिहासविद प्रो.सतीश चंद्र मित्तल, डॉ.बाल मुकुंद पाण्डेय,भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव प्रो.कुमार रतनम् मंचासीन थे। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन,राष्ट्रगान एवं कुलगीत से

किया गया। अतिथियों का स्वागत सूतमाला,स्मृतिचिन्ह एवं गांधी जी की पुस्तक देकर किया गया। अतिथियों का परिचय जनसंचार विभाग के प्रो.कृपाशंकर चौबे ने किया।विषय परिचय डॉ. मनोज राय ने प्रस्तुत किया।

बीज वक्तव्य में प्रो. रामजी सिंह ने कहा कि गांधी पूरी दुनिया के हैं।150वीं जयंती मनाना हमारा धर्म है। विश्व मानवता गांधी विचारों को देख रही है। उनकी प्रासंगिकता को कोई इंकार नहीं कर सकता। गांधीजी ने आध्यात्मिक अभियंत्रणा के अलावा सामाजिक अभियंत्रणा को भी जोड़ा। उन्होंने व्यक्ति के निर्माण के लिए एकादश व्रत की बात की। समाज निर्माण के लिए 18 कार्यक्रम दिए। हाल ही के दिनों में नागरिक हिंसा बढ़ रही है इस पर गांधीजी का समता विचार प्रभावकारी है। उन्होंने कहा कि मूल्यवान समाज के लिए समता जरूरी है। गांधीजी की सात्विक दृष्टि से समाज निर्माण के लिए हमें सोचना चाहिए।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सदस्य सचिव प्रो. कुमार रतनम ने कहा कि गांधी जीवन, विचार और दर्शन है। वे राष्ट्रभाषा की बात करते हैं और रामराज्य की स्थापना की कल्पना करते हैं। गांधी आर्थिक सोच का परिचायक है। अब समय आ गया है कि गांधी जी के विचारों की पुनर्स्थापना हों। गांधी जी समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए रामराज्य की बात करते हैं। इतिहासविद डॉ. बालमुकुंद पांडेय ने कहा कि गांधी जी का भारतीय स्थिति के साथ तादात्म्य दिखता है। दैहिक ताप से बचकर जिने का विचार उनके दर्शन में व्यक्त होता है। गांधी जी के जीवन के विभिन्न पहलुओं पर उन्होंने विस्तार से विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि गांधी जी

के पास सात्विक शक्तियां थी। गांधी जी के स्वराज से खादी तक के विचार आज भी प्रासंगिक हैं और इसके लिए युवा, नौजवान फलक पावड़े बिछाएं हुए हैं।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष प्रो. अरविंद जामखेडकर ने कहा कि दक्षिण अफ्रीका की स्वतंत्रता के लिए गांधी जी प्रेरणा के स्त्रोत बने। शांति के लिए उनके विचार अंतर्गत संघर्ष और एकात्मता के लिए आज भी प्रासंगिक है । इतिहासविद प्रो. सतीश चंद्र मित्तल ने कहा कि सत्य, अहिंसा, परस्पर प्रेम और आध्यात्मिकता ये चार महत्वपूर्ण तत्व गांधी विचार का आधार है। प्रो. मित्तलने गांधीजी के 21 कार्यक्रमों की चर्चा की। गांधीजी मातृभाषा के हिमायती थे। उन्होंने गांधी वाड़मय का उल्लेख करते हुए अनेक तथ्यों से अवगत कराया। स्वराज्य शब्द को लेकर प्रो. मित्तल ने कहा कि यह शब्द नया नहीं है। उन्होंने पूर्ण स्वराज्य की कल्पना की है। गांव के अंतिम व्यक्ति को सहभागिता का अवसर मिले इसे वह संपूर्ण स्वराज मानते थे। इतिहास का दाखिला देकर उन्होंने कहा कि गांधी की नीतियों को नहीं चलने देने वालो ने उन्हें भूला दिया है, उनके विचार सुने नहीं गए। वर्धा का उल्लेख करते हुए उनका कहना था कि विभाजन पर गांधीजी काफी व्यथित थे। अनेक प्रश्नों के उत्तर उनके साहित्य और दर्शन में है जिसे हर नौजवान ने पढ़ना चाहिए। राष्ट्रगीत के साथ उदघाटन कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनोद कुमार ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो.कृष्ण कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर पूर्व कुलपति प्रो. जी. गोपीनाथन, के. एम. मालती, अनंतराम त्रिपाठी, जवाहर कर्नावट, हेमचंद्र वैद्य, हितेंद्र पटेल तथा विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष एवं शोधार्थी, विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

<u>बुधवार को सेवाग्राम में होगा परिसंवाद</u>

परिसंवाद के दूसरे दिन (21 अगस्त) के सभी कार्यक्रम सेवाग्राम आश्रम,बापू कुटी में होंगे। प्रात: 9.15 बजे से वृत्त चित्र के प्रदर्शन से कार्यक्रम प्रारंभ होंगे। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जी गोपीनाथन की अध्यक्षता आयोजित सत्र में प्रो.दिनेश सिंह, डॉ.अवकाश जाधव एवं डॉ.विक्रांत शर्मा अपने वक्तव्य प्रस्तुत करेंगे। पंचम सत्र की अध्यक्षता प्रो.राम प्रकाश द्विवेदी करेंगे। सत्र में प्रो.आनंद कुमार, प्रो. नमिता निंबालकर एवं डॉ.वीनू पंत अपने विचार रखेंगे। पष्ठसत्र की अध्यक्षता प्रो.हिंमाशु चतुर्वेदी करेंगे। डॉ. सुषमा शर्मा, प्रो. वी. के. वशिष्ठ एवं राजेश कुमार वक्तव्य देंगे। अध्यक्षीय उदबोधन के बाद 4.30 बजे से आश्रम दर्शन,प्रार्थना सभा और वृत्त चित्र प्रदर्शन का आयोजन होगा।

22 अगस्त का आयोजन हिंदी विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में किया जाएगा। सप्तम सत्र की अध्यक्षता प्रो.वी.के. वशिष्ठ करेंगे। प्रो.के.एम.मालती, प्रो.पुष्पा मोतियानी एवं देवजानी चक्रबोर्ती अपने वक्तव्य रखेंगे। अष्ठम सत्र की अध्यक्षता प्रो.पुष्पा मोतियानी करेंगी तथा डॉ.शैलेश कुमार मिश्र, प्रो.मेधा तापियावाला एवं डॉ.सुरेश कुमार वक्तव्य देंगे। नवम सत्र की अध्यक्षता डॉ.रवि खानगी करेंगे। सत्र में डॉ. ऐंजला गंगमई, डॉ.रवि शेखर सिंह, एवं डॉ.राणा सोनिया तेजबहादुर वक्तव्य देंगे।

परिसंवाद के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो.कुमार रत्नम करेंगे। इस सत्र में वक्ता के रूप में प्रो.अशोक मोडक,मुंबई, राघवशरण शर्मा,वाराणसी, प्रो. वी. के.वशिष्ठ,राजस्थान वक्तव्य देंगे।